Mahila college Dalminagar
Department of History
B.A III (Hons)

Dr. Anu Kumari
Date - 18/07/2024

Topic

कुतुबुद्दीन ऐबक के जीवनी एवं निर्माण कार्य।

=> ऐबक एक तुर्की शब्द है जिसका अर्थ है - चन्द्रमा का देवता ऐबक ने अपनी पुत्री का विवाह इल्तुतमिश से किया, अपनी बहन का विवाह नासिरुद्दीन कुबाचा के साथ और अपना विवाह यल्दौज की पुत्री के साथ किया। कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गोरी का दास था। गोरी ने उसे अमीर-ए-आखुर (शाही अस्तबल का प्रधान) नियुक्त किया। इसी हैसियत से उसने गोरी के साथ अभियानों में भाग लिया। तराइन की लड़ाई के पश्चात् मोहम्मद गोरी द्वारा ऐबक को भारत में विजित प्रदेशों का प्रभारी नियुक्त किया गया। गोरी के मृत्योपरान्त गयासुद्दीन महमूद ने ऐबक को 1208 ई० तक मालिक और सिपहसालार की पदवी से ही सन्तुष्ट होना पड़ा। 1208 ई० में ऐबक दासत्व से मुक्त हुआ।

माना जाता है कि शासक बनने के कुछ समय तक इन्द्रप्रस्थ को अपना सैनिक मुख्यालय बनाया था फिर उसने

गजनी के शासक यल्दोज के खतरे से बचने के लिए लाहौर को अपनी राजधानी बनाई।

1206 ई० में बख्तियार खिलजी की मृत्यु हो गई। बख्तियार अपने स्वामी मोहम्मद गोरी के प्रति वफादार था और कुतुबुद्दीन ऐबक का विरोधी नहीं था। बख्तियार की हत्या अलीमर्दान ने की। परन्तु बख्तियार की मृत्योपरांत बंगाल और बिहार मे अराजकता फैल गई। खिलजी सरदार ने अलीमर्दान को बंदी बना लिया और मोहम्मद शेरा को बंगाल का शासक बना दिया। खिलजी सरदार दिल्ली सल्तनत की अधीनता स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे। वे बंगाल को स्वतंत्र राज्य का रूप देना चाहते थे। अलीमर्दान कैद से मुक्त होकर कुतुबुद्दीन ऐबक की शरण में गया।

कुतुबुद्दीन ऐबक ने कैमाज को बंगाल विद्रोह शांत करने का दायित्व सौंपा। कैमाज के अथक परिश्रम के बाद ही बंगाल के खिलजी सरदारों ने अलीमर्दान को सूबेदार की मान्यता दी। अलीमर्दान दिल्ली की अधीनता स्वीकार कर वार्षिक कर देने लगा।

ऐबक को उसकी उदारता के कारण लाखबख्श यानि लाखों का दानी कहा जाता था। कुतुबुद्दीन की उदारता का प्रचार सुदूर दक्षिण में था और फरिश्ता का कथन है कि जब कोई व्यक्ति असीमित दान देता था तो

Scanned with CamScanner

लोग उसे अपने समय का ऐबक कहकर पुकारते थे। मिन्हाज-उस-सिराज ने ऐबक को हातिमताई द्वितीय कहा। अपने सहयोगियों के बीच उसे न्यायपूर्ण राजा के रूप में जाना जाता था। वह कुरान ख्वाँ (कुरान का पाठ करने वाला) के नाम से भी प्रसिद्ध हुआ। हसन निजामी, फक्र-ए-मुदब्बीर जैसे विद्वानों को ऐबक का संरक्षण प्राप्त था।

ऐबक द्वारा निर्माण कार्य

ऐबक ने कुछ निर्माण कार्य भी किए। दिल्ली में उसने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया। पहले यह एक जैन मंदिर था, जिसे बाद में विष्णु मन्दिर में परिवर्तन कर दिया गया था। अजमेर में अढ़ाई-दिन-का झोंपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण करवाया। दिल्ली के प्राचीनतम 7 नगरों में माना जाता है। 1206ई. में कुतुबुद्दीन बख्तियारूद्दीन काकी के सम्मान में उसने कुतुबमीनार का निर्माण शुरू करवाया था, जिसे इल्तुतमिश ने पूरा करवाया।